

## जगत माहि संत परम हितकारी

संत परम हितकारी, जगत माहि संत परम हितकारी ।

प्रभु पद प्रगट करावे प्रीती, भ्रम मिटावे भारी ।

परम कृपालु सकल जीवन पर, हरि सम सकल दुःख हारी ।

त्रिगुन्तीत फिरत तन त्यागी, रीत जगत से नयारी ।

ब्रह्मानंद कहे संत की सोबत, मिळत है प्रगट मुरारी ।

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/12/title/jagat-mahi-sant-param-hitkari>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले ।